

PROF. DILIP KUMAR CHAKRABARTI

Prof. Dilip Kumar Chakrabarti is Emeritus Prof. of South Asian Archaeology at Cambridge University and a distinguished fellow of Vivekananda International Foundation, a think-tank of Delhi.

2. Born on April 27, 1941, Prof. Chakrabarti was educated at Calcutta University where he was awarded Ph. D in 1973. He held appointments in Calcutta University (1963-77), Delhi University (1977-90) and Visva Bharati (1980-81) before he joined Cambridge University in 1990 and retired from there in 2008. During this period, he also held visiting assignments in many national and international institutions

3. Prof. Chakrabarti's research interests cover a vast field — history of cities, archaeological, literary, geological and ethnographic perspectives of the use of iron and copper, external trade of the Indus Civilization, development of archaeological ideas and researches, socio-politics of the modem studies on the ancient past, field-study of ancient routes which linked the Ganga-Yamuna plain with the Deccan and the routes which traversed the Deccan and linked it with the southern tip of the Peninsula, the borderlands and boundaries of the subcontinent from Baluchistan to Patkai Range and Myanmar, the archaeology of European expansion with reference to Gujarat, and field-study of the archaeological and historical landscape of Kangra valley, Chhotanagpur Plateau, the entire stretch of alluvium from the Chittagong hills to the border with Pakistan, and Rajasthan.

4. Prof. Chakrabarti's research has been characterised by originality, scholarship and a solid grip of the historical problems involved. His work on ancient Indian cities put the issue unerringly in the context of the subcontinent's history. His work on iron and copper ushered in an era where the diverse details related to metallurgy took the historical study of metals to its roots far beyond diffusionary theories. The detailed study of the Indus Civilization contacts with central and west Asia was a major point of departure in south Asian archaeology. His researches on the history of archaeology mark him out as an encyclopaedic scholar and his analysis of the socio-politics of the ancient Indian past was pathbreaking in every sense. His other research areas established his position as the primary student of the sub-continent's archaeological and historical geography in addition to 200 articles and reviews, he has so far published 27 single authored books, 2 co-authored books and 12 edited volumes.

5. Prof. Chakrabarti has received a number of honours including D.Litt (Honoris Causa) by M. J. P Rohilkhand University, Bareilly, Dr. V. S. Wakankar Rashtriya Samman by Madhya Pradesh Government in Archaeology, S.C.Chakrabarti Medal of Asiatic Society, Kolkata and Gurudev Ranade Award by Indian Archaeological Society.

पद्म श्री



प्रो. दिलीप कुमार चक्रवर्ती



प्रो. दिलीप कुमार चक्रवर्ती कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में दक्षिण एशियाई पुरातत्व विज्ञान के अवकाश प्राप्त प्रोफेसर और दिल्ली स्थित थिंक-टैंक विवेकानन्द इंटरनेशनल फाउंडेशन के प्रतिष्ठित फेलो हैं।

2. आपका जन्म 27 अप्रैल, 1941 को हुआ। आपकी शिक्षा-दीक्षा कलकत्ता विश्वविद्यालय में हुई जहां से आपने वर्ष 1973 में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। आप कलकत्ता विश्वविद्यालय (1963-77), दिल्ली विश्वविद्यालय (1977-90) और विश्व भारती (1980-81) से जुड़े रहे। बाद में वर्ष 1990 में आपको कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में नियुक्ति मिली और वर्ष 2008 में वहीं से सेवानिवृत्त हुए। इस अवधि के दौरान, आपने कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संस्थानों में अतिथि प्रोफेसर के रूप में भी कार्य किया।

3. प्रो. चक्रवर्ती की अनुसंधान रुचिका क्षेत्र बहुत ही व्यापक है- नगरों का इतिहास, लोहे और तांबे के उपयोग के पुरातात्विक, साहित्यिक, भू-वैज्ञानिक और मानव जातीय परिपेक्ष्य, सिंधु घाटी सभ्यता में विदेशी व्यापार, पुरातात्विक विचारों और अनुसंधानका विकास, प्राचीन इतिहास पर आधुनिक अध्ययन की सामाजिक-राजनीति, गंगा-यमुना के मैदान को दक्खिन से जोड़ने वाले प्रचीन मार्गों और दक्खिन को मोड़कर इस प्रायद्वीप के दक्षिणी छोर से जोड़ने वाले मार्गों का जमीनी-अध्ययन, बलूचिस्तान से पतकाई रेंज और म्यांमार तक इस उपमहाद्वीप के सीमावर्ती क्षेत्रऔर सीमाएं, गुजरात के संदर्भ में यूरोपीयविस्तार क्षेत्र का पुरातत्व, और कांगड़ा घाटी, छोटानागपुर पठार के पुरातात्विक तथा ऐतिहासिक परिदृश्य का जमीनी अध्ययन, चटगांव की पहाड़ियों से लेकर पाकिस्तान की सीमा और राजस्थान तक,का कछार का क्षेत्र।

4. आपके अनुसंधान की मुख्य विशेषता उसकी मौलिकता, विद्वता और ऐतिहासिक समस्याओं पर मजबूत पकड़ है। इस उपमहाद्वीप के इतिहास के संदर्भ मेंप्राचीन भारतीय शहरों से संबंधित आपका शोध पूर्णत: सटीक हैं।लोहे और तांबे के संबंध में आपके शोध ने एक ऐसा युग उद्घाटित किया जहां धातु-विज्ञान से संबंधित विविध ब्योरेधातुओं के ऐतिहासिक अध्ययन को डिफ्यूजनरी सिद्धांतों से आगे इसकी जड़ों तक लेकर गए। सिंधुघाटी सभ्यता के मध्य और पश्चिम एशिया से जुड़ी हुई कड़ियोंका विस्तृत अध्ययन दक्षिणएशियाई पुरातत्व विज्ञान का सबसे बड़ा प्रस्थान बिंदु साबित हुआ। पुरातत्व विज्ञान के इतिहास से संबंधित आपके शोध आपको एक एन्साइक्लोपेडिक विद्वान के रूप में स्थापित करते हैं और प्राचीन भारत की सामाजिक-राजनीति से संबंधित आपका विश्लेषण हर तरह से अत्यंत मौलिक है। आपके शोध के अन्य क्षेत्रों ने आपको उप-महाद्वीप के पुरातात्विक और ऐतिहासिक भूगोल के मुख्य शोधार्थी के रूप में स्थापित किया। 200 लेखों और समीक्षाओं के अतिरिक्त अब तक आपकी 27 पुस्तकें,सहलेखक के रूप में 2 पुस्तकें और 12 संपादित खण्ड प्रकाशित हुए हैं।

5. प्रो. चक्रवर्ती को अनेक सम्मान प्राप्त हुए हैं जिनमें एम.जे.पी. रोहिलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली द्वारा डी. लिट (मानद), पुरातत्व विज्ञान के क्षेत्र में मध्य प्रदेश सरकार द्वारा डॉ. वी.एस. वाकनकर राष्ट्रीय सम्मान, एस.सी. चक्रवर्ती मेडल ऑफ ऐशियाटिक सोसाइटी,कोलकातातथा भारतीय पुरातत्व सोसाइटी द्वारा गुरुदेव रानाडे पुरस्कार शामिल हैं।